पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना

विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना (ई.एस.आई.पी.) सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन और जीविका लाभ के माध्यम से अनुकूलन आधारित शमन के लिए मॉडल का प्रदर्शन करके ग्रीन इंडिया मिशन के लक्ष्यों का समर्थन करता है। ई.एस.आई.पी. जैवविविधता और कार्बन स्टॉक सहित प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के लिए नए उपकरण और प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रहा है। परियोजना के मुख्य घटक हैं: वानिकी और भूमि प्रबंधन कार्यक्रमों में सरकारी संस्थानों की क्षमता को मजबूत करना, वन गुणवत्ता में सुधार करना, और सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणालियों को बढ़ाना। ई.एस.आई.पी. को भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के समग्र मार्गदर्शन में भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्, छत्तीसगढ़ वन विभाग और मध्य प्रदेश वन विभाग द्वारा मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों के चुनिन्दा भूभागों में क्रियान्वयित किया जा रहा है।

प्रकाशित :

ई.एस.आई.पी.– परियोजना कार्यान्वयन इकाई
जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन प्रभाग
भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
वेबसाइट : www.icfre.gov.in

कॉपीराइट@ICFRE, 2020

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

परियोजना निदेशक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224831
ई–मेल : projectdirectoresip@gmail.com

परियोजना प्रबंधक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224803, 2750296, 2224823
ई–मेल : rawatrs@icfre.org; esippm@gmail.com

ब्रह्मास्त्र

खेती की कीड़ों व रोगों से पूर्ण सुरक्षा

सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

ब्रह्मास्त्र क्या है?

ब्रह्मास्त्र जैविक खेती मे प्रयोग किया जाने वाला सबसे प्रभावकारी जैविक कीटनाशक है जो न सिर्फ कीड़ों से बल्कि रोगों से भी सभी प्रकार की उपज की रक्षा करता है अपितु उत्पादकता को भी बढ़ाता है।

ब्रह्मास्त्र
खेती की कीड़ों व रोगों से पूर्ण सुरक्षा

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा एकीकृत कृषि विकास प्रणाली के तहत ब्रह्मास्त्र बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम

ब्रह्मास्त्र बनाते समय ध्यान देने योग्य बातें

- ब्रह्मास्त्र को हमेशा मिट्टी या प्लास्टिक के बर्तन में बनायें।
- इसे बनाने में इस्तेमाल होने वाली पत्तियों को अच्छे से कूट लें जिससे उबालते समय पत्तियों का रस पूरी तरह से घुल जाये।

ब्रह्मास्त्र से होने वाले लाभ

ब्रह्मास्त्र फसलों को सबसे ज्यादा नुकसान करने वाली बड़ी सुण्डियों और इल्लियों को नष्ट करने में काफी कारगर है। इसके अतिरिक्त ये पौधों को अनेक प्रकार की बीमारियों से भी बचाता है, साथ ही हमें अधिक और अच्छी गुणवत्ता की उपज मिलती है।

ब्रह्मास्त्र बनाने के लिए आवश्यक सामग्री

1. गौमूत्र	–	10 लीटर
१ नीम की पत्ती	–	3 किलोग्राम
२ करंज की पत्ती	–	2 किलोग्राम
३ सीताफल की पत्ती	–	2 किलोग्राम
४ अरंडी की पत्ती	–	2 किलोग्राम
५ बेल की पत्ती	–	2 किलोग्राम
६ धतूरे की पत्ती	–	2 किलोग्राम

* मिटटी/प्लास्टिक का बर्तन

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा ब्रह्मास्त्र बनाने का प्रशिक्षण

ब्रह्मास्त्र बनाने की प्रक्रिया

- दी गयी किसी भी पांच प्रकार की पत्तियों को कूटकर या पीसकर चटनी जैसी बना लें। फिर इनको गौमूत्र में मिलाकर किसी मिटटी के बरतन में डालकर उबाल लें। 4–5 उबाल के बाद 48 घंटे तक किसी छायादार स्थान में रखकर ठंडा कर लें।
- फिर इसे सूती कपडे की सहायता से छानकर किसी मिटटी के बर्तन में भरकर छायादार स्थान में ढककर रख दें और आवश्यकता अनुसार प्रयोग करते रहें।
- एक बार में बनाये गए ब्रह्मास्त्र का उपयोग आप 6 माह तक कर सकते हैं।

ब्रह्मास्त्र को उपयोग करने का तरीका

10 लीटर ब्रह्मास्त्र को 200 लीटर पानी के साथ मिलाकर लगभग एक एकड़ खेत में छिड़काव किया जा सकता है।

जैविक खेती का महत्त्व

जैविक खेती पारितंत्र (जल, जंगल, जमीन) और फसलों को रासायनों के दुष्प्रभाव से बचाकर मानव व प्रत्येक जीवधारी को स्वस्थ जीवन प्रदान करती है। जैविक खेती सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली 'एकीकृत कृषि विकास' की महत्त्वपूर्ण घटक है जो पारितंत्र की सेवाओं को बढ़ाने में काफी कारगर है। जैविक खेती में प्रयोग किये जाने वाले कीटनाशक खेती के मित्र कीटों को बिना नुकसान पहुचाये परभक्षी कीटों को भगाकर खेत और फसलों को कीटों द्वारा होने वाले नुकसान से बचाते हैं।

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा एकीकृत कृषि विकास प्रणाली के तहत ब्रह्मास्त्र बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम